**SHODH SAMAGAM**

**ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)**

# भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध संदर्भः जैन आगम में धारणीय विकास

**अक्षय कुमार जैन,** Ph.D., अर्थशास्त्र विभाग
शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय, पिछोर, जिला–शिवपुरी, मध्यप्रदेश, भारत

**ORIGINAL ARTICLE**

**Author**
**अक्षय कुमार जैन,** Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 10/04/2024
Revised on : -----
Accepted on : 11/06/2024
Overall Similarity : 02% on 03/06/2024

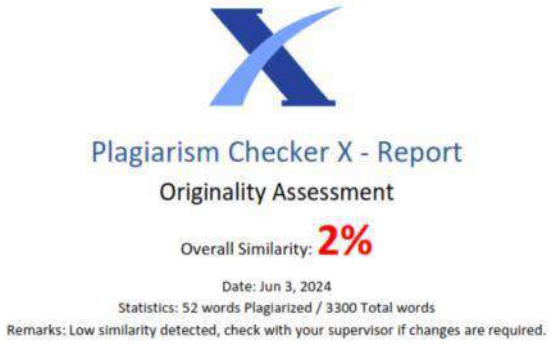


## शोध सार

*धारणीय विकास की अवधारणा वर्तमान में सर्वाधिक चर्चित और नवीन अवधारणा के रूप में स्वीकार की जा रही है। संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2015 में संधारणीय विकास लक्ष्य (SDG) के अंतर्गत 17 लक्ष्य और 169 विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित किए हैं जिनके प्राप्त करने की समय सीमा 2030 निर्धारित की गई है। वास्तव में धारणीय विकास की अधिक व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक परिभाषा इसका विधि–विधान और मानवीय कृत्य–अकृत्य को हजारों वर्ष पूर्व जैन आगम में विस्तृतता के साथ स्थान दिया गया है किन्तु शिक्षाविदों ने देश से ही धारणीय विकास की अवधारणा का चयन न करके विदेशी विचारकों पर अधिक विश्वास किया तथा उनके द्वारा दिये गए विचारों को श्रेष्ठ तथा मूल मानते हुए उन्हे साहित्य में उच्च स्थान प्रदान कर उसी के समान व्यवहार करने का आव्हान किया जो उचित प्रतीत नहीं होता है। जैन धर्म विश्व के प्राचीन धर्मों में से एक है जिसके आगमों में जीवन के प्रत्येक पहलू पर बहुत ही विस्तार से अध्ययन कर स्थान प्रदान किया है। वर्तमान में भारतवर्ष में परंपरागत ज्ञान को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से धारणीय विकास की भारतीय अवधारणा को जैन आगम के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन शास्त्रार्थमीमांसा (व्याख्याशास्त्र) शोध प्रविधि पर द्वितीयक समंकों पर आधारित है जिसमें जैन, बौद्ध तथा हिन्दू धर्म ग्रंथों, टीकाओं, लेखों, पुस्तकों, शोधपत्रों, वेबसाइट आदि का अध्ययन किया गया है।*

## मुख्य शब्द

*जैन आगम, जैन धर्म, धारणीय विकास, एसडीजी, शाकाहार, भारतीय ज्ञान परंपरा.*

## प्रस्तावना

पुराणों को जैन धर्म में आगम कहा जाता हैं। पुराण शब्द मूलरूप से संस्कृत साहित्य का है जिसका अर्थ होता हैं पुराना या पुरातन आख्यान। अथर्ववेद के अनुसार 'पुराणं पुरातन वृतांत कथन रूपमाख्या नमः'[1] सामान्य तौर पर जो प्राचीन काल में विद्यमान था उसे पुराण के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। प्रथम वेद ऋग्वेद में भी पुराण शब्द का उल्लेख विशेषण के रूप में मिलता है जिसका अर्थ है प्राचीन।[2] जैन दृष्टिकोण से आचार्य जिनसेन के अनुसार 'पुरातनं पुराण स्यात्'[3] अर्थात् जो प्राचीन है वही पुराण है। जैन धर्म में प्रयुक्त होने वाले 'आगम' शब्द मूल ग्रंथो के लिए है जिसका अर्थ है कि जिससे वस्तु तत्व का पूर्ण ज्ञान हो वही आगम है। जैन परंपरा में पुराण के दो प्रकार कहे गए हैं – पुराण एवं महापुराण। पुराण वह है जिसमें एक शलाकापुरुष के चरित्र का वर्णन हो तथा महापुराण में 63 शलाकापुरूषों के चरित्र का वर्णन होता है।[4] जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से ही जैन आगम का उद्भव हुआ है, मुख्य तौर पर आगम को दो भागों में बांटा गया अंग प्रविष्ट और अंग वाह्य। अंग प्रविष्ट आगम तीर्थंकरों द्वारा उपदिष्ट और गणधरों द्वारा रचित होते हैं। तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी एवं तृतीय काल में दिये गये प्रवचनों को वृषभसेन गणधर ने पुराण का रूप प्रदान किया तथा चतुर्थ काल में चौबीसवे तीर्थंकर महावीर की वाणी को गौतम गणधर जो की उनके शिष्य थे ने बारह अंगों में समाविष्ट किया जिसे द्वादशांगी कहा जाता हैं[5] जबकि अंग वाह्य आगमों की रचना स्थविर करते हैं। जैन आगम की रचना प्राकृत अपभ्रंश भाषा में की गई है जो की उस समय जनमानस की भाषा थी तत्पश्चात् अन्य क्षेत्रीय भाषाओं कन्नड, तमिल, गुजरती, हिन्दी आदि में भी आगम का सृजन हुआ। जैन आगम के अन्य प्रकारों में प्रकीर्णक साहित्य, निर्युक्ति साहित्य, चूर्णि साहित्य, टीका साहित्य, शौरसैनी साहित्य, कुंदकुंदाचार्य का साहित्य और चार अनुयोग जैन सिद्धांतों को समझने के प्रमुख स्त्रोत हैं।

## अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्न हैं:

1. धारणीय विकास की अवधारणा का ऐतिहासिक एवं धार्मिक तारतम्य को स्पष्ट करना।
2. जैन आगम मे धारणीय विकास के स्वरूप का अध्ययन करना।
3. जैन व्रत एवं सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में प्रकृति समंजस्य एवं धारणीय विकास का अध्ययन करना।
4. ..... SDG) को प्राप्त करने में जैन व्रत एवं सिद्धांतों की भूमिका का अध्ययन करना।

## शोध प्रविधि

यह अध्ययन विश्लेषणात्मक प्रकार का है जो द्वितीयक समंकों पर आधारित हैं। द्वितीयक समंक का संग्रहण विभिन्न जैन, बौद्ध और सनातन धर्म के ग्रन्थों, टीकाओं, शोधपत्रों, लघु शोध प्रबंधों, शोध प्रबंधों, आलेखों आदि का अध्ययन कर किया गया हैं। विभिन्न समाचार पत्र–पत्रिकाओं मे प्रकाशित आलेखों, प्रवचनों, प्रश्नोत्तरों आदि का भी अध्ययन किया गया है, साथ ही विश्वसनीय वैबसाइट का भी सहारा लिया गया है।

## अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन पर्यावरण चेतना एवं पर्यावरण प्रबंध की धार्मिक विधियों को अपनाने के प्रति लोगों मे चेतना लाने के साथ–साथ धर्म के वैज्ञानिक स्वरूप एवं सिद्धांतो को स्पष्ट करने मे सहायक सिद्ध होगा। यह अध्ययन शोधार्थियों, पर्यावरणविदों, समाजशास्त्रियों, चिंतकों, विचारकों आदि को शोध के नये क्षेत्र, नई दृष्टि एवं दिशा प्रदान करने मे सहायक सिद्ध होगा।

## धारणीय विकास

जो जीवन को धारण करता हैं वह धारणीय है। धारणीय विकास की अवधारणा वर्तमान में सबसे चर्चित अवधारणाओं में से एक है। संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) ने 1983 में एक 'पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग' (WCED) का गठन नोर्वे के पूर्व प्रधानमंत्री ग्रो हर्लेम ब्रण्टलैंड की अध्यक्षता में किया था जिसने अपनी रिपोर्ट 'हमारा

सांझा भविष्य' के नाम से 1987 में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में धारणीय विकास को स्पष्ट करते हुए लिखा है 'सभी की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति और एक अच्छे जीवन की आकांक्षाओं की संतुष्टि के लिए सभी को अवसर प्रदान करने के रूप में की है'। 3–14 जून 1992 को आयोजित 'संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन' (UNCED) का आयोजन ब्राज़ील के शहर रियो डी जेनेरो में हुआ जिसमें धारणीय विकास को इस प्रकार परिभाषित किया 'ऐसा विकास जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को भावी पीढ़िओं की आवश्यकताओं की पूर्ति क्षमता का समझौता किए बिना पूरा करें'।[6] एडवर्ड बारबियर[7] ने धारणीय विकास को गरीबी से जोड़ते हुए इसे गरीबों का जीवन स्तर को ऊंचा उठाने और दरिद्रता को कम करके चिरस्थाई आजीविका निर्वहन के संसाधन उपलब्ध कराना है जिससे संसाधन अपक्षय, पर्यावरण अपक्षय, सांस्कृतिक विघटन और सामाजिक अस्थिरता न्यूनतम हो इसी को ध्यान में रखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2015 में पृथ्वी के बिगड़ते स्वास्थ्य को सुधारने एवं इसे लंबे समय तक सुरक्षित रखने हेतु विभिन्न प्रकृति एवं सामाजिक मुद्दो के अनुरूप '2030 तक सभी लोगों और दुनिया के लिए एक बेहतर और अधिक संधारणीय भविष्य प्राप्त करने की मूल योजना' ध्येय वाक्य के साथ संधारणीय विकास लक्ष्य (SDG) के 17 लक्ष्य और 169 विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित किए हैं जिन्हे प्राप्त करने के लिए विश्व के सभी देशों से ऐसी चर्यायेँ अपनाने हेतु आग्रह किया गया है जो पर्यावरणानुकूल हो। उपरोक्त से स्पष्ट है कि बिना किसी को क्षति पहुंचाए होने वाला विकास ही धारणीय हैं तथा इसे प्राप्त करने क लिए कुछ नियम/व्रत/सिद्धान्त का पालन किया जाना आवश्यक है।

## जैन आगम में धारणीय विकास

'जियो और जीनो दो' और 'परोस्परोपग्रहों जीवानाम्'[8] के सिद्धान्त पर चलने वाला सर्वहितकारी जैन धर्म के तीर्थंकरों, आचार्यो, गणधरों, मनीषियों, चिंतकों आदि ने प्रकृति पूर्ण विचारों और सिद्धांतों को अपनाकर सम्पूर्ण जगत को ऐसा श्रेष्ठ आचरण जिसमें कृत–कारित–अनुमोदना की क्रियाएँ शामिल हो को धारण के लिए आग्रह किया हैं। जैन आगम के अनुसार चलने वाले अपनी क्रियाओं और चर्याओं के माध्यम से दूसरों को प्रकृति हितकारी व्यवहार करने के लिए प्रेरित करते हैं। जैन आगम में वर्णित धरणीय विकास से संबन्धित वर्णित व्रत, सिद्धान्त और नियम निम्न हैं:

### 1. लेश्या[9]

जो कर्म–स्कन्ध से आत्मा को लिप्त करे या जिसके द्वारा आत्मा पुण्य पाप से अपने को लिप्त करती है, वह लेश्या हैं। जैन आगम में छः लेशयायें वर्णित हैं। इनमें से तीन कृष्ण, नील और कापोत को अप्रशस्त कहा गया है तथा शेष तीन– पद्म, तेजो और शुक्ल को प्रशस्त कहा गया हैं, जिनमें अर्थशास्त्रीय दृष्टि से साधनों और संसाधनो को बिना नुकसान पहुंचाये अथवा कम से कम नुकसान पहुंचाये अधिकतम लाभ प्राप्त करने की प्रेरणा हैं। प्रथम तीन जो संसाधनों को अधिक नुकसान करती हैं से अंतिम तीन की ओर की यात्रा जैनत्व का मूल आधार हैं जिसमें प्रकृति, पर्यावरण, जीव–जंतुओं, पशु–पक्षियों और वनस्पति की रक्षा का अमर संदेश दिया गया हैं। लेशयाओं का नामकरण वैज्ञानिक आधार पर है जो रंगो पर आधारित हैं; कृष्ण (काला) लेश्या प्रकृति को सबसे अधिक हानि पहुँचती हैं से शुक्ल (सफ़ेद) सबसे कम नुकसान पहुँचती हैं उसकी साधना ही धारणीयता हैं। लेश्या का पालन करने से एसडीजी के प्रथम लक्ष्य– गरीबी उन्मूलन (No Poverty), द्वितीय– भुखमरी से मुक्ति (Zero Hunger), तृतीय– उत्तम स्वास्थ्य और खुशहाली (Good Health and Well being), छटा– स्वच्छ जल और साफ सफाई (Clean Water and Sanitation), बारहवाँ– उत्तरदायित्व पूर्ण खपत और उत्पादन (Responsible Consumption and Production) तथा तेरहवाँ– जलवायु परिवर्तन कार्यवाही (Climate Action) आसानी से प्राप्त हो जाते हैं।

### 2. अणुव्रत

जैन धर्म में श्रावक और श्रमण[10] का विशेष महत्व है। श्रमण शब्द 'समण' से बना है जिसके तीन अर्थ है– सम, शम और श्रम। इसका अर्थ है मानसिक–वैचारिक संतुलन व परिपक्वता के साथ सबके प्रति समता और समानता का व्यवहार करते हुए श्रमपूर्वक जीवन जीना। श्रमण शब्द का प्रयोग साधुजनों के लिए किया जाता है जो श्रम और पुरुषार्थ पर अवलंबित विवेकसम्मत साधना करते है। आरंभिक तौर पर जिन्होने इस विवेक सम्मत साधना का नेतृत्व किया 'कुलकर' कहलाये जिसका अर्थ होता है, समुदाय का प्रमुख। इनको मानव सभ्यता का सूत्रधार माना जाता

है। उन्होने प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं के विधिपूर्वक व विवेकसम्मत उपयोग की कला सिखाई।[11]

श्रावक एवं श्राविका शब्द का उपयोग सद्ग्रहस्थ और सदग्राहिणी के लिए किया गया है। भगवान महावीर ने श्रावक के लिए बारह व्रतों की व्यवस्था की है इसमें 5 अणुव्रत और 7 शिक्षाव्रत (3 गुणव्रत, 4 शिक्षाव्रत)[12] शामिल हैं। अणुव्रत के माध्यम से भगवान महावीर ने क्रमबद्ध और सूक्ष्म चिंतन दिया है जिसका संबंध सीमित संसाधनो का उपयोग करने से होता है जो प्रकृति और जैव संसाधनो को धारणीय बनाते हैं। इसका भाव है 'न्यूनतम लेना, अधिकतम देना और श्रेष्ठतम जीना'। इन बारह व्रतो में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, बृहमचर्य, अपरिग्रह, दिशा–परिमाण व्रत, उपभोग–परिभोग परिमाण व्रत, अनर्थदंड विरमण व्रत, सामयिक व्रत, देशावकाशिक व्रत, पौषधोपवास व्रत, अतिथि संविभाग व्रत शामिल हैं।

जैन धर्म में अहिंसा की अवधारणा बहुत ही विस्तृत और व्यावहारिक है जिसका संबंध प्राणी मात्र के प्रति की जाने वाली किसी भी प्रकार की हिंसा से है। वनस्पति, जीव–जन्तु, पशु–पक्षी और मनुष्य का अतिउपभोग हिंसा है जो बताता है कि सीमा में उपभोग होना चाहिए इसी विचार को वर्तमान में धारणीय विकास की संज्ञा दी गई है। अहिंसा व्रत एसडीजी के तृतीय लक्ष्य– उत्तम स्वास्थ्य और खुशहाली (Good health and Well being), पांचवा– लैंगिक समानता (Gender Equality), छठा– स्वच्छ जल और साफ सफाई (Clean Water and sanitation), तेरहवाँ– जलवायु परिवर्तन कार्यवाही (Climate Action), चौदहवाँ– जलीय जीवों की सुरक्षा (Life Below Water), पंद्रहवाँ– थलीय जीवों की सुरक्षा (Life on Land) तथा सोलहवां– शांति एवं न्याय और सशक्त संस्थाएं (Peace and Justice) के लक्ष्यों को बिना किसी अतिरिक्त प्रयास के प्राप्त करने का सामर्थ्य रखते हैं।

अपरिग्रह व्रत भारतीय संस्कृति का साम्यवाद है जो अधिक प्रभावशाली, निरापद और विकासोन्मुख है। उपासकदशांग में इसका नाम इच्छा परिमाण व्रत है जो अत्यंत अर्थपूर्ण है।[13] इच्छाएँ आकाश के समान अनंत हैं और इनके परिसीमन के लिए बाहरी परिग्रह का परिसीमन करना अर्थात् अपरिग्रही होना आवश्यक हैं। उपासकदशांग में सात प्रकार के परिग्रह का त्याग बताया गया है– क्षेत्र (भूमि), वास्तु (भवन), हिरण्य(चाँदी), सुवर्ण (सोना), द्विपद (दास–दासी), चतुष्पद (पशुधन), धन (चलसम्पत्ति, वाहन), धान्य (अनाज एवं खाने पीने की वस्तुएँ) और कुप्य (घर ग्रहस्थी का सामान) इन सबका परिग्रह ही धारणीय विकास में बाधक है क्योंकि यह प्रकृति का अधिक दोहन के लिए प्रेरित करता है। आगम कहता है कि अपरिग्रह का पालन करने पर वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करके भी पर्यावरण को बचाते हुए भविष्य की पीढ़ियो को समृद्ध पर्यावरण सौप सकते हैं। यह सिद्धान्त एसडीजी के प्रथम लक्ष्य–गरीबी उन्मूलन, द्वितीय–भुखमरी से मुक्ति, तृतीय–उत्तम स्वास्थ्य, छटा–स्वच्छ जल, सातवाँ–प्रदूषण मुक्त ऊर्जा, दसवाँ–असमानताएँ कम करना, ग्यारहवाँ–सतत शहर एवं संतुलित समुदाय, तेरहवाँ–जलवायु परिवर्तन कार्यवाही, सोलहवां–शांति एवं न्याय लक्ष्यों को सहज ही प्राप्त किया जा सकता हैं।

अनर्थदंड विरमण व्रत यह धर्मशास्त्र का आठवाँ व्रत है इसे अर्थशास्त्र का प्रथम व्रत भी कहा जा सकता हैं जिसका संबंध ऐसी गतिविधियों से है जो जीवन व्यवहार और व्यापार में उद्देश्यहीन और अपव्ययकारी हैं जो प्रकृतिक संसाधनों पर अनावश्यक दबाव डालती हैं। वर्तमान में आधुनिक जीवन शैली में अपव्यय अत्याधिक बढ़ गए हैं यह व्रत ऐसी निरर्थक प्रवृतियों की विस्तार से व्याख्या करता है इसकी पाँच कोटियाँ[14] तथा पाँच अतिचार[15] बताये हैं जिनके उचित रूप से पालन करने पर विभिन्न संसाधनों बिजली, पानी, जैव ईंधन, गैस आदि का अपव्यय रोका जा सकता हैं। अनर्थदंड विरमण व्रत में आतिशबाज़ी को निष्प्रयोजन पर्यावरण को क्षति पहुंचाने वाली और अनुत्पादक माना गया है। ठीक यही विचार माननीय सुप्रीम कोर्ट ने भी दिया है और आतिशबाज़ी/बारूद के नियंत्रण पर प्रभावकारी कदम उठाया हैं। इस व्रत से एसडीजी का प्रथम गरीबी उन्मूलन, द्वितीय भूखमरी से मुक्ति, तेरहवां जलवायु परिवर्तन कार्यवाही बाले लक्ष्य स्वतः प्राप्त हो जाते हैं।

देशावकाशिक व्रत यह व्रत सीमा को निर्धारित करता है कि एक सीमा के बाद व्यक्ति उपभोग परिभोग का भी विवेकपूर्वक त्याग रखेगा। यह व्रत स्वदेशी को अपनाने और विदेशी वस्तुयों और यात्राओं को नियमित और नियंत्रित करता है। इस व्रत की सहायता से एसडीजी का प्रथम लक्ष्य गरीबी उन्मूलन, आठवाँ– उत्कृष्ट और आर्थिक विकास (Decent work and Economic Growth), नौवा– उद्योग नवाचार एवं बुनियादी सुविधाएं (Industry,

Innovation and Infrastructure) तथा बारहवाँ– उत्तरदायित्व पूर्ण खपत और उत्पादन (Responsible consumption and production) जो देश के आर्थिक विकास में सहायक है को प्राप्त कर देश को विकसित किया जा सकता है।

### 3. दान

जैन आगम में दान बनाम संविभाग का लेख विद्यमान है जिसमें कहा गया है 'दानं सम्यग् विभाजनम्' अर्थात् संसाधनो का समुचित विभाजन दान है। यह ग्रहस्थ का बारहवाँ व्रत है जिसमें उसे साधनों और संसाधनों के संविभाग के सलाह दी गई हैं जिसका उद्देश्य साधनों का उचित बंटवारा करना और सामाजिक आर्थिक समानता की स्थापना करना है। यह दान परार्थ और परमार्थ के लिए है। साधन सम्पन्न व्यक्तियों का दायित्व हैं कि वे सामुदायिक संपन्नता के लिए कार्य करें। दान की अवधारणा गरीबी को हटाने और समाजवाद स्थापित करने में प्रभावी है। यह एसडीजी के प्रथम लक्ष्य गरीबी उन्मूलन (No Poverty), द्वितीय– भुखमरी से मुक्ति (Zero Hunger), चतुर्थ– सर्वोत्तम शिक्षा (Quality Education), पाँचवाँ–लैंगिक समानता (Gender Equality), दसवां– असमानताएं कम करना (Reduced Inequalities) तथा सोलहवां– शांति एवं न्याय और सशक्त संस्थाएं (Peace and Justice) को प्राप्त करने में सहायक है।

### 4. शाकाहार

शाकाहार, मानव सभ्यता और संस्कृति का अरुणोदय तो अर्थशास्त्र का उषाकाल हैं। ऋषभदेव तीर्थंकर ने जनता को असि, मसि और कृषि का बोध प्रदान किया है। कृषि का ज्ञान देकर शाकाहारिता को व्यवस्थित किया हैं। मानव के पूर्वज शाकाहारी थे, जॉन होपकिंस विश्वविद्यालय के नेतत्व शास्त्री डॉ. आलन वाकर[16] ने अपने अध्ययन में पाया कि मानव के पूर्वज न तो मांसभक्षी और ना ही सर्वभक्षी थे, बल्कि वे शाकाहारी थे। उन्होंने मनुष्य की दंत–रचना का 1 करोड़ 20 लाख वर्षों के काल पटल का विस्तृत व गहन अन्वेषण किया है। शाकाहार को अपना कर जल संकट को दूर किया जा सकता है, क्योंकि मांसाहार उत्पादन कि तुलना में शाकाहार के उत्पादन में 1/100 वां भाग पानी लगता है। एक शाकाहारी एक वर्ष में जितने जल का उपभोग करता है वह एक मांसाहारी द्वारा उपयोग किए जाने वाले एक माह के जल के बराबर मात्रा हैं। PETA की रिपोर्ट के अनुसार एक पाउंड मांस का उत्पादन करने के लिए 2400 गैलन पानी लगता है जबकि इतना ही गेंहू उगाने के लिए केवल 25 लीटर पानी की खपत होती हैं।[17] मांसाहार के उत्पादन के अड्डे कत्लखानों में भी पानी का अनाप–शनाप उपयोग होता है। भारत सरकार द्वारा प्रकाशित वार्षिक संदर्भ पुस्तक 'भारत 1995' में 'कार्टमेंन' (Cartman) के अध्यक्ष प्रो एन.एस. रामास्वामी के अनुसार मुंबई स्थित देवनार कत्लखाने में प्रतिवर्ष 4458000 करोड़ लीटर पेयजल का उपयोग होता है।[18] उपरोक्त तथ्य स्पष्ट करते है कि शाकाहार जल संरक्षण के साथ–साथ प्रकृति संरक्षण का भी नायाब तरीका हैं। इसी प्रकार मांस उत्पादन की लागत अनाज उत्पादन की लागत से काफी अधिक हैं। एक पॉण्ड गोमांस उत्पादन करने में 16 पॉण्ड अनाज और शूकर मांस उत्पादन पर 6 पॉण्ड अनाज की खपत होती है।[19] जानी मानी पशु अधिकारवादी कार्यकर्ता मेंनका गांधी के अनुसार यदि भारत मांस की खपत 20 प्रतिशत घटा दे तो 6 करोड़ टन अनाज बचेगा जो 30 करोड़ लोगों का पेट भरने के लिए पर्याप्त होगा। एक किलो प्रोटीन प्राप्त करने के लिए जानवर को सात किलो अनाज खिलाना पड़ता है अर्थात् मांसाहारी भोजन के कारण प्राकृतिक संसाधनों के बहुत अधिक खर्च होने से गरीब वर्ग के लिए मूल खाद्यान्न की कमी आती है साथ ही जमीन पर खेती के स्थान पर चारा उत्पादन करना पड़ता है। यूएनओ के एसडीजी द्वितीय– भुखमरी से मुक्ति (Zero Hunger), को प्राप्त करने के साथ साथ तृतीय–उत्तम स्वास्थ्य और खुशहाली (Good health and Well being), छटा–स्वच्छ जल और साफ–सफाई (Clean Water and Sanitation), तेरहवाँ–जलवायु परिवर्तन कार्यवाही (Climate Action), चौदहवाँ–जलीय जीवों की सुरक्षा (Life Below Water), पंद्रहवाँ–थलीय जीवों की सुरक्षा (Life on Land) तथा सोलहवां–शांति एवं न्याय और सशक्त संस्थाएं (Peace and Justice) के लक्ष्य को वास्तविक रूप से उपस्थित कराने में शाकाहार ही सक्षम हैं।

### 5. संयम

जैन आगम में संयम की अवधारणा बहुत गहरी और विस्तृत है जिसके विभिन्न आयाम हैं। अहिंसा और संयम जैन आगम में सहवर्ती गुण हैं। इन्हे अर्थशास्त्र में नियामक तत्व माना जा सकता हैं। संयम अपव्यय के द्वारों को

बंद कर जीवन के समस्त व्यवहारों में विवेक और अनुशासन लाता है। जैन आगम में संयम के चार प्रकार– मन, वचन, शरीर और उपकरणो का संग्रह[20] हैं जिन्हे विशिष्टता के आधार पर 17 प्रकार में विभाजित किया गया है। आगमानुसार उपभोक्ता का प्रेक्षा संयमी न होने से अपव्ययकारी 'प्रयोग करो और फेकों' (Use and Throw) जैसा असंयमी व्यवहार प्रदूषण का कारण बनता है जो खाद्य श्रंखला, कार्बन, हाइड्रोजन आदि चक्रों में हस्तक्षेप उत्पन्न कर प्रकृति और समाज में असंतुलन पैदा करता है। परिठावणिया संयम का संबंध असुचिताओं (मलमूत्र, औद्योगिक कचरा आदि) के विसर्जन से हैं आगम के अनुसार इनका विसर्जन इस प्रकार करना चाहिए की पर्यावरण को क्षति न हो यह संयम पर्यावरण प्रदूषण जैसे विभीषिका को नियंत्रित करता है। आत्म संयम यानि ब्रह्मचर्य यह तीर्थंकर महावीर की सम्पूर्ण मानव जाति को सबसे उत्तम देन है। माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए जिस तरीके को प्रतिपादित किया है उसका निरूपण जैन आगम में 33 शताब्दी पूर्व ही हो चुका था। जैन धर्मावलंबियो द्वारा इस व्रत का पालन करने के कारण जनसंख्या नियंत्रित है, स्त्री–पुरुष अनुपात[21] अनुकूल है, शिक्षा स्तर उच्च है एवं आर्थिक सबलता है। सच है 'अणेगा गुणा आहीणा भवति एक्कंमि बन्भचेरे'[22] अर्थात् ब्रह्मचर्य की साधना से अनेक गुणो का संचार होता है। यह व्रत एसडीजी के लैंगिक समानता, जलवायु सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण में क्षेत्र में सबसे अधिक प्रभावी है।

### 6. असि, मसि व कृषि

आचार्य जिनसेन ने तीर्थंकर ऋषभदेव के समय प्रचलित आजीविका के छह साधनों का उल्लेख किया है जिसे असि (राजतंत्र), मसि (अर्थतन्त्र), कृषि (खेती), विद्या (शिक्षा), वाणिज्य (व्यापार, व्यवसाय), और शिल्प (कला, कौशल) इन्ही के कारण उस समय के मानवों को 'षट्कर्मजीविनाम्'[23] कहा गया है। अर्थोपार्जन मैं साधनो के उपयोग मैं पर्यावरण एवं समाज के हितमित दृष्टि की शुद्धता को कडाई से पालन करने और विवेकसम्मत प्रयोग करने का उल्लेख जिन आगम में है। कृषि कार्य में प्रकृतिजन्य आगतों का उपयोग करना श्रेयस्कर बताया गया हैं यह कृषि की वही पद्धति है जिसे वर्तमान में जैविक खेती (Organic Farming) के नाम से प्रचारित किये जाने के साथ–साथ अपनाने पर ज़ोर दिया जा रहा है। यह कृषि पद्धति प्रकृति संबंधी किसी भी विकृति को जन्म ही नहीं लेने देती।

## निष्कर्ष

अधिकांश वैश्विक समस्याओं का कारण मानव का अति परिग्रही, असंयमी और शाकाहार से दूर होना है जिसके कारण प्रकृति का विदोहन तेजी से हुआ है और प्राकृतिक असंतुलन होने से धारणीय विकास जैसे संकल्पना को लाना पड़ा है। वास्तव मे यह संकल्पना मौलिक नहीं है वल्कि जैन आगम सहित अन्य पुराणों और ग्रन्थों में हजारों वर्ष पूर्व से ही विद्यमान है। वर्तमान मे व्यक्ति धार्मिक आचार–विचार पर गंभीरता से ध्यान नहीं दे रहा है, बल्कि तकनीकि, मशीन, और भौतिक चीजों पर अधिक ध्यान दे रहा हैं जिसका परिणाम हैं की गंभीर समस्याओं के हल जो हमारी सरल दैनिक कार्यकलापों मे विद्यमान हैं के स्थान पर गंभीर तकनीकि तरीके के हल ढूंडे जा रहे हैं जो समस्या को न केवल और पेचीदा कर रहे हैं, बल्कि नई समस्या को भी जन्म दे रहे हैं। जैन आगम मे वर्णित व्रत, सिद्धान्त और नियम एसडीजी के अधिकांश लक्ष्यों को बिना पेचीदगियों के सरल और सहज रूप से प्राप्त करने मे सक्षम हैं। 'जियो और जीनो दो' और 'परोस्परोपग्रहों जीवानाम्' के सिद्धान्त कल भी कारगर थे आज भी हैं और कल भी रहेंगे। इन सिद्धांतो का पालन करने से हम 'प्रयोग करो और फेकों' जैसी व्यय पूर्ण एवं प्रकृति विरोधी संस्कृति से दूर रह कर प्रकृति, पर्यावरण और जीव के बीच सामंजस्य बनाए रखते हुए विकास के पथ पर अग्रसर रह सकते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम प्रबुद्धजन किसी भी बाहरी/विदेशी विचार को अपनाने से पहले अपनी 'आदि ज्ञान परंपरा' में समाविष्ट श्रोतों का गहराई से अध्ययन करे तो निश्चित रूप से पाएंगे कि इसकी वैज्ञानिक और तार्किक व्याख्या पूर्व से ही भारतीय श्रोतों में वर्णित है। आशा है शीघ्र ही विकसित भारतीय आदि ज्ञान–विज्ञान पूर्व की भाँति सम्पूर्ण विश्व को पुनः ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित कर सिरमौर बनेगा।

## संदर्भ सूची

1. अथर्ववेद, सायण भाष्य 11/4/9/24

2. ऋग्वेद 3 / 54 / 9,3 / 58 / 6,10 / 130 / 6
3. आदिपुराण 1 / 21
4. आदिपुराण 1 / 22–23, पांडवपुरण पृ. 9
5. आदिपुराण 1 / 201
6. https://www.un.org (url- https://www.un.org/en/conferences/environment/rio1992)
7. https://www.drishtiias.com/hindi/mains-practice-question/question-708/pnt
8. तत्त्वार्थसूत्र 5.21
9. पच्चीस बोल का थोकडा 17 वां बोल
10. श्री, विचक्षण (2021) *जैन धर्मः कहाँ, क्यों और कब,* श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय, उदयपुर, राजस्थान।
11. आचार्य देवेंद्र मुनि, ऋषभदेव का परिशीलन, पृ. 123
12. धींग, दिलीप (2007) *जैन आगमों का अर्थशास्त्रीय मूल्यांकन,* प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, पृ. 175–176
13. उवासगदसाओ 1 / 49
14. उपासकदशांग 1 / 43, आवश्यक सूत्र रत्नकाण्ड श्रवकाचार 75, सर्वार्थसिद्धि 7 / 21
15. उवासगदसाओ 1 / 48
16. https://en.m.wikipedia.org, Assess on 15 March 2024.
17. http:/www./peta.org, Assess on 20 March 2024.
18. https://en.wikipedia.org/wiki/N._S._Ramaswamy, Assess on 15 March 2024.
19. 'शाकाहार क्रांति' इंदौर, जनवरी 2021, पृ. 3
20. स्थानांग सूत्र 4 / 2
21. Census of India, 2001, 2011
22. प्रश्नव्याकरण 2 / 4
23. आदिपुरण 16 / 179, 39 / 143
24. शर्मा, बाँके लाल (1987) *Economic Ideas in Ancient India Before Kautilya,* Ramanand Vidya Bhavan, New Delhi, p. 29-30,126.
25. Deodhar, Satish Y. (2018) Indian Antecedents to Modern Economic Thought, Indian Institute of Management (IIM), Ahemdabad, p. 5, 12.
26. Vakil, Leena C. (1970) Indian Economic Thought with special emphasis on Gandhian Influences, A thesis submitted to Fresno State College, p.14-18.
27. हुरुई, जैन धर्म का समग्र विभाजन और उसका प्रभाव, *Chetana International Educational Journal,* January-March 2020, Year-5, Volume-1, ISSN- 2231-3613, p. 33-38.
28. जैन, धर्मचंद (2015) *जैन धर्म–दर्शनः एक अनुशीलन,* प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर (राजस्थान), पृ. 256–261, 284–295, 323–326, 344–353.

29. बया, दलपलसिंह (2004) *'श्रेयश', जैन–धर्म : जीवन–धर्म,* आगम अहिंसा समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर (राजस्थान), पृ. 344–348.

30. जैन, कैलाश चंद (2005) *जैन धर्म का इतिहास,* डी.के. परीं वर्ल्ड (प्रा) लि., न्यू दिल्ली, 2005, ISBN 81-246-0317-0, पृ. 127–129, 292–297.

31. Peter Flugel, Jainism and Society, Bulletin of School of Oriental and African Studies, university of London, 2006, United kingdom, https://www.researchgate.net/publication/231993674, Assess on 26/12/2022.

32. जैन, स्वर्णलता (2016) जैन संविधान, श्री कुन्दकुन्द दिगंबर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सागर (म. प्र.), पृ. 30,32.

33. आचार्य महाप्रज्ञ, (2007) *महावीर का अर्थशास्त्र,* आदर्श साहित्य संघ, नई दिल्ली, पृ. 57–66.

34. जैन, रुचि जैन (2017) पुराणों के विशेष संदर्भ में: प्राचीन भारतीय मनोरंजन, शोध प्रवंध, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान), पृ. 17–26.

## शब्दार्थ

- **गणधर:** गणधर, तीर्थंकर के मुख्य शिष्य होते है जो तीर्थंकर के द्वारा कही गई बातों को दोष रहित तरीके से वाणी रूप में कहते हैं।
- **शलाकापुरुष:** धर्मतीर्थ सेवन करने वाले अत्यंत पुण्यवान पुरुष को शालकापुरुष कहा जाता हैं जैन धर्म में 63 शलाकापुरुष माने गए हैं
- **उत्सर्पिणी:** ब्रहमांडीय समय चक्र का आरोही भाग
- **अवसर्पिणी:** ब्रहमांडीय समय चक्र का अवरोही भाग
- **स्थविर:** एक प्रकार के मुनि
- **परोस्परोपग्रहों जीवानाम्:** जीवों के परस्पर में उपकार हैं
- **CARTMAN:** Centre For Action Research Technology For Man, Animal And Nature
- **PETA:** People for the Ethical Treatment of Animals
- **SDG:** Sustainable Development Goal
- **UNCED:** United Nations Conference on Environment and Development
- **UNO:** United Nations Organisation
- **WCED:** World Commission of Environment and Development

********